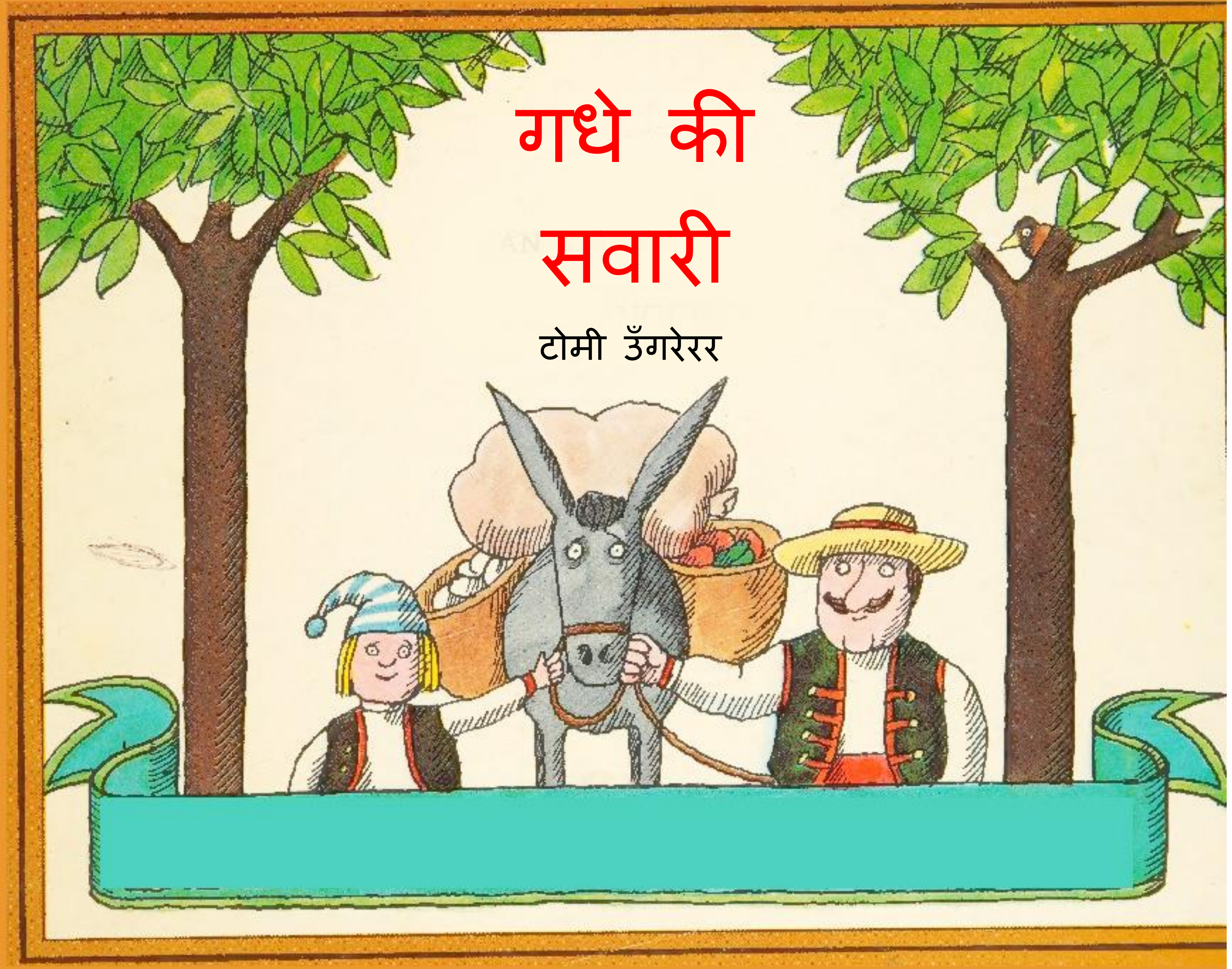
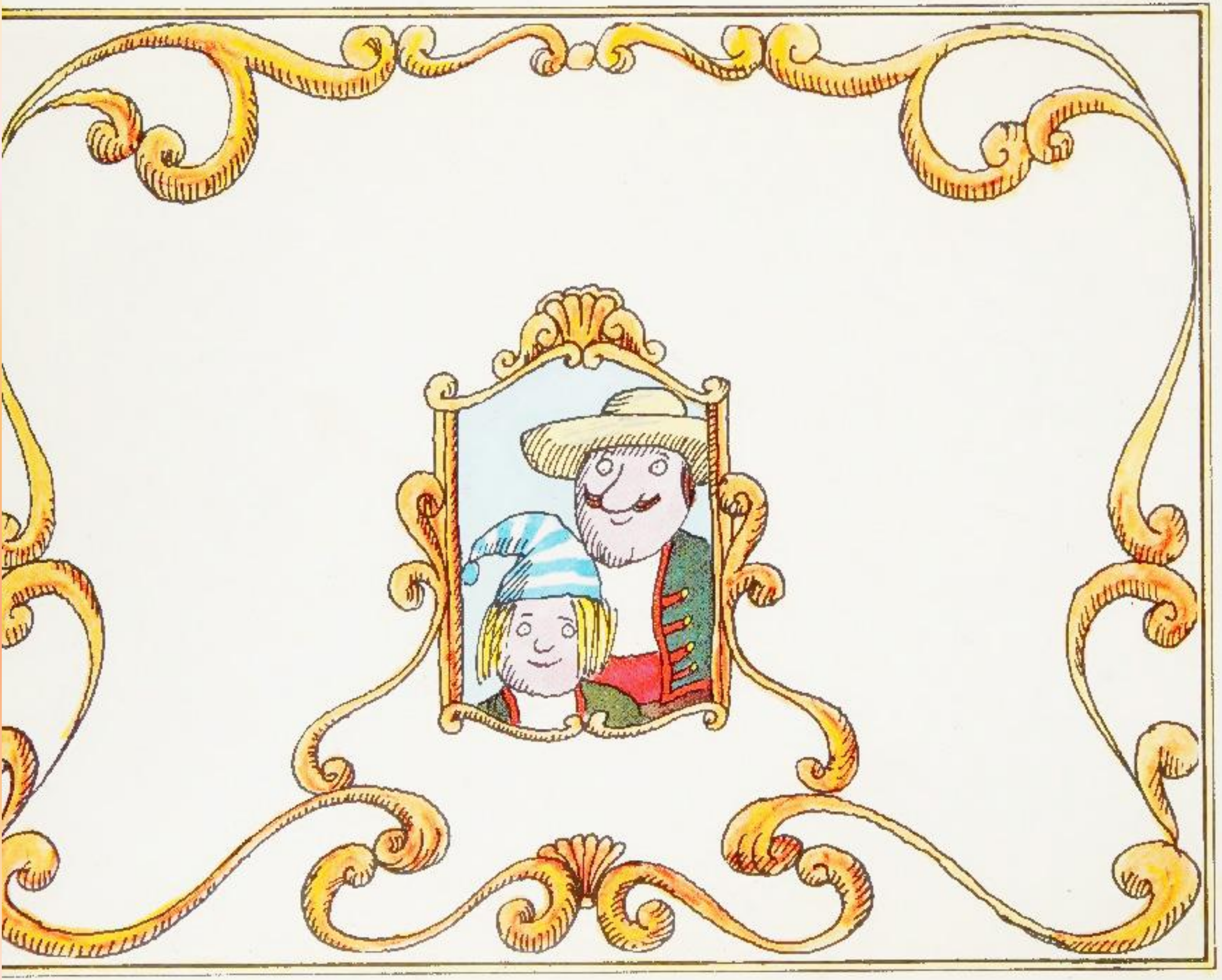
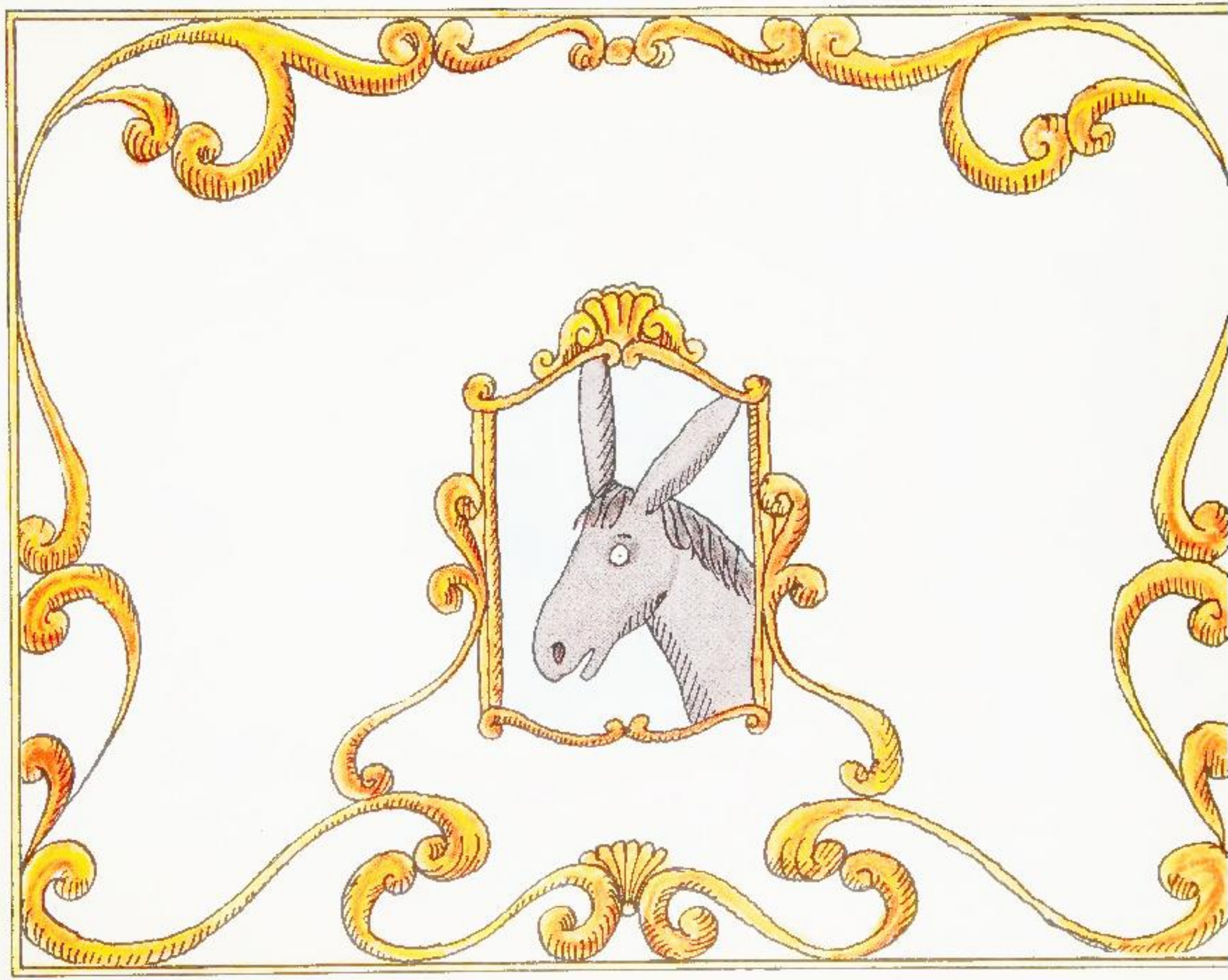
गधे की सवारी

टोमी उँगरेरर







गधे की सवारी

टोमी उँगरेरर

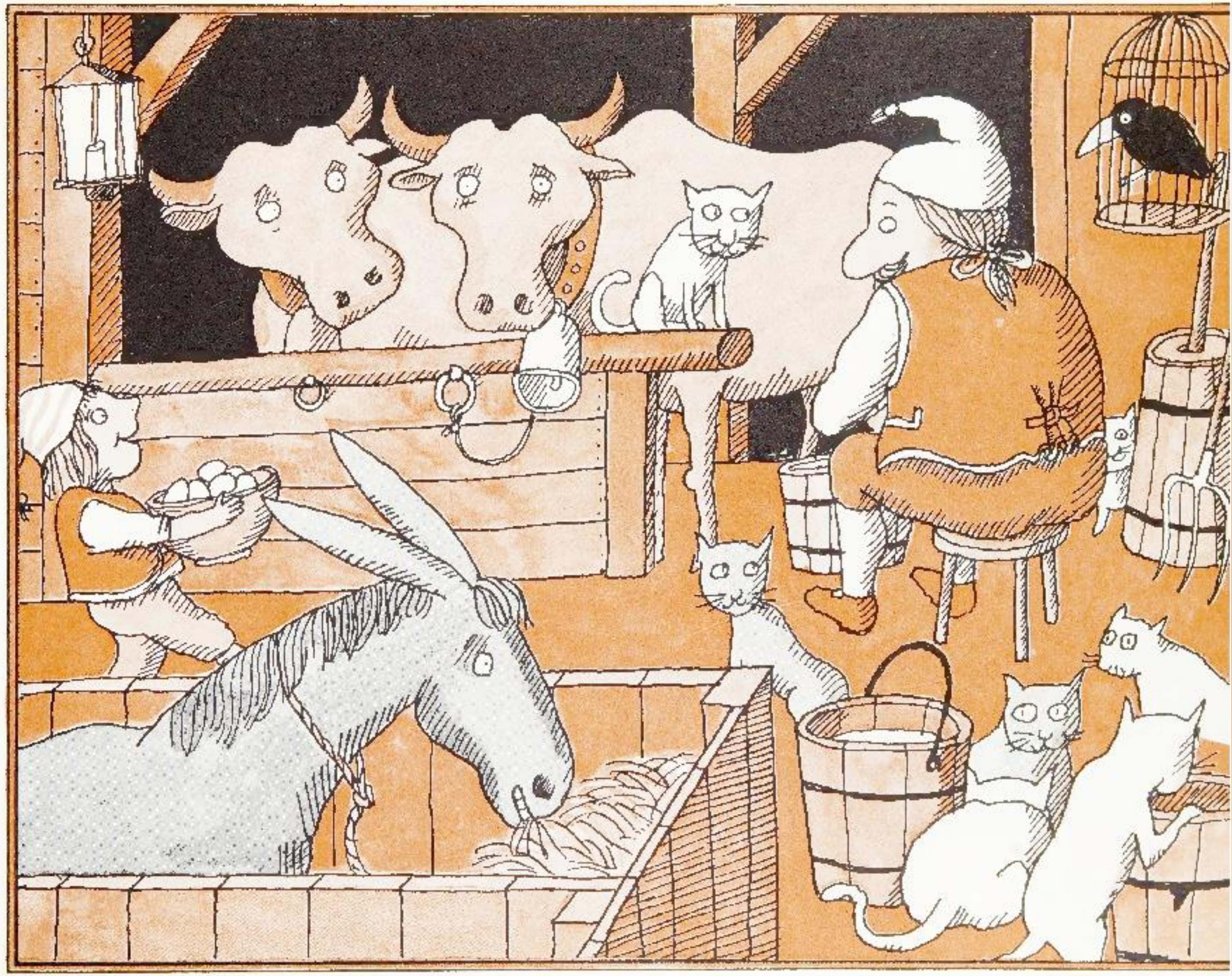
एक समय की बात है. एक गाँव में एक व्यक्ति अपने बेटे के साथ एक छोटे से फार्म में रहता था. वह दोनों अपना अधिकांश समय टमाटर और मटर और खीरे उगाने में व्यतीत करते थे.





उनके पास कुछ मुर्गियाँ थीं जो अंडे देती थीं. इन अंडों से और मुर्गियाँ निकलती थीं. उनके पास दो गायें थीं जो दूध देती थीं और दूध पीने के लिए उनके पास सात बिल्लियाँ थीं.

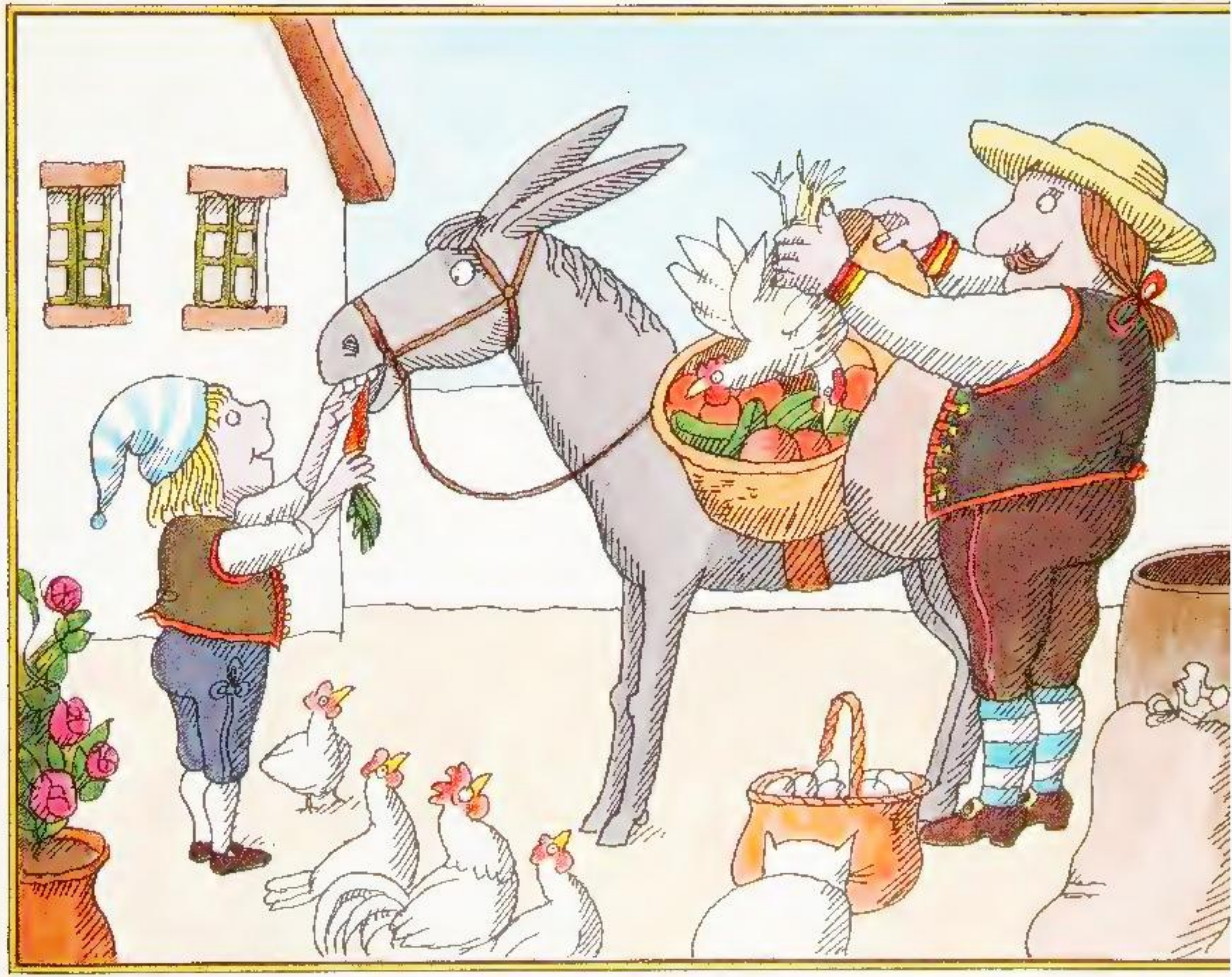
उनके पास एक छोटा गधा भी था जिस पर गर्मियों की ऋतु में, हर शनिवार के दिन, वह बचे हुए टमाटर और खीरे और मुर्गियाँ और अंडे लाद कर गाँव के बाज़ार में बेचने के लिए ले जाते थे.





एक दिन प्रभात के समय उस आदमी और उसके बेटे ने गधे पर सारा सामान लाद दिया और दोनों बाज़ार की ओर चल दिए. "यह लंबा सफर होगा," पिता ने कहा, "लेकिन बाज़ार तो चल कर हमारे पास नहीं आएगा."

"हाँ पिता जी," बेटे ने कहा. उसके पिता हर अवसर पर कोई न कोई टिप्पणी करते ही थे और बेटा उन्हें बड़ा बुद्धिमान समझता था. हालांकि हर ग्रीष्म के हर शनिवार की हर सुबह उसके पिता कहते थे, "लेकिन बाज़ार तो चल कर हमारे पास नहीं आएगा" तब भी हर ग्रीष्म के हर शनिवार की हर सुबह के समय बेटा बड़े अभिमान के साथ कहता था, "हाँ, पिता जी."

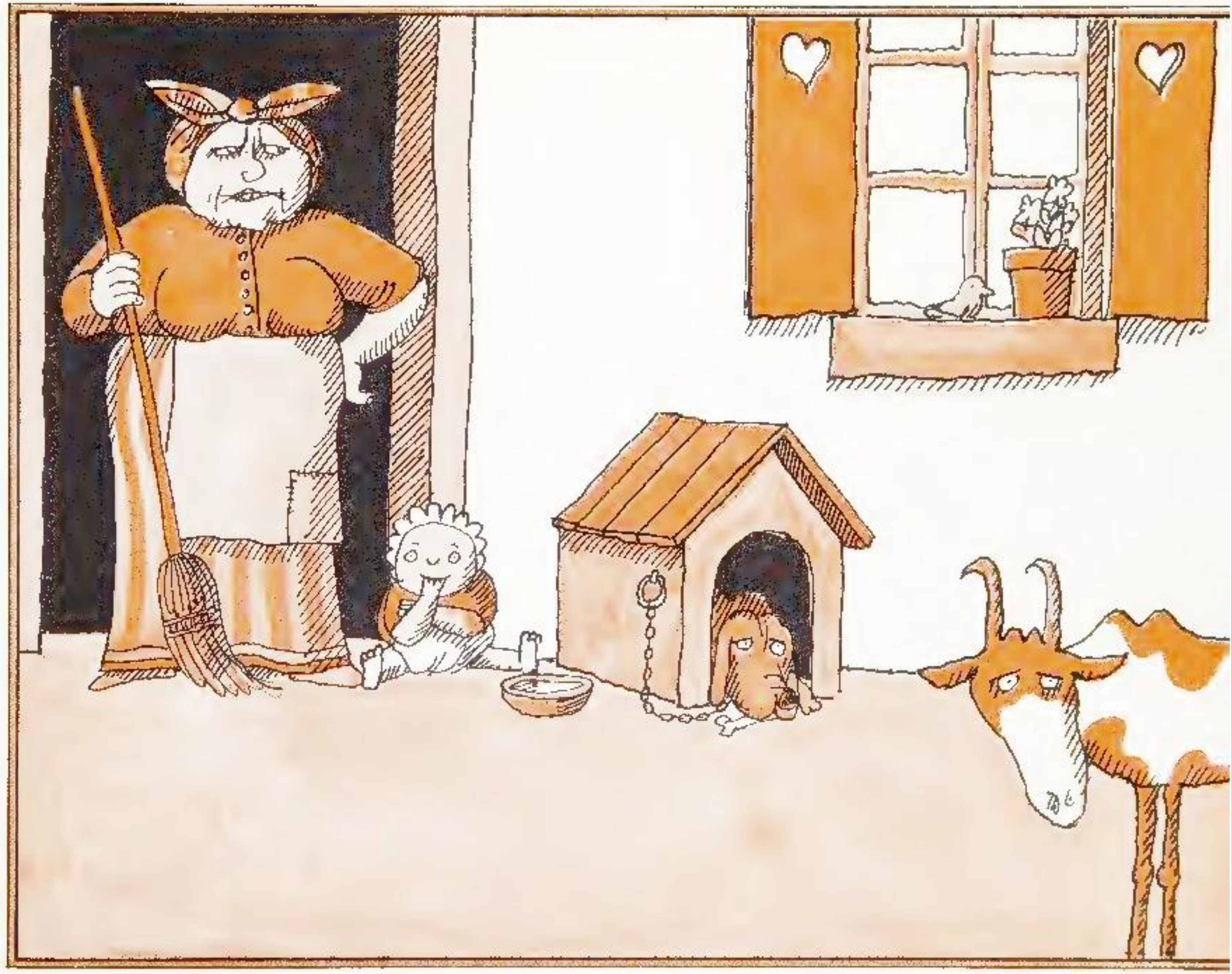


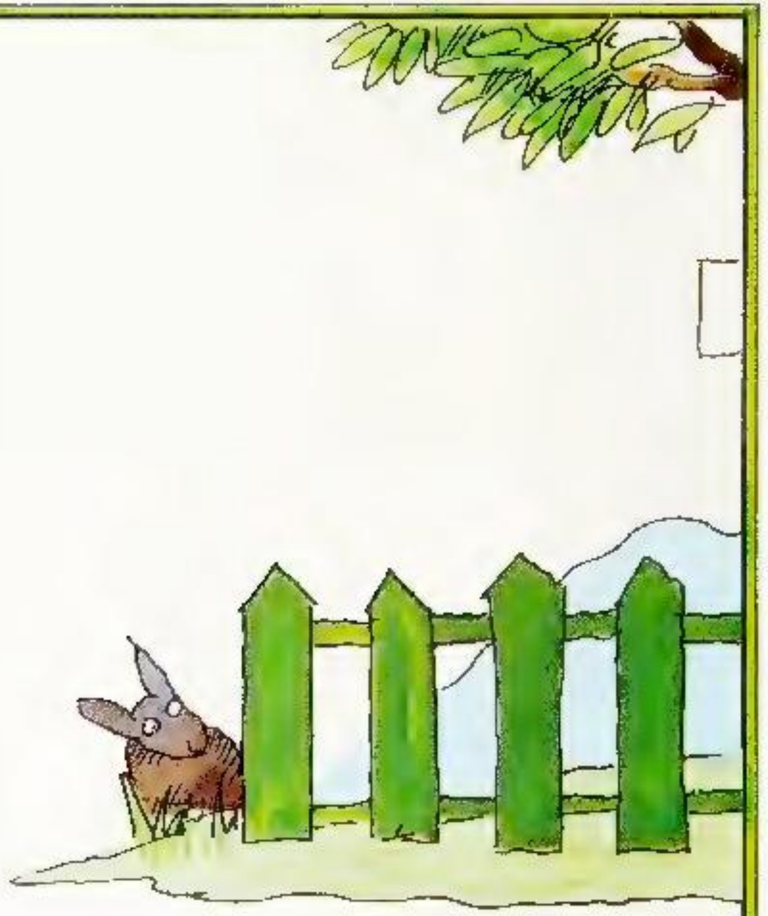


इस सुबह, लगभग एक घंटे चलने के बाद, वह एक औरत के पास से निकले, औरत एक छोटे, लेकिन मोटे, लड़के के साथ अपने घर के दरवाज़े के पास खड़ी थी.

“शुभ प्रभात, महोदया,” आदमी ने कहा, “कितना सुहावना दिन है, ओस की बूंदें सूर्य के प्रकाश में चमक रही हैं.”

“शुभ प्रभात, निःसंदेह!” औरत ने फुफकारते हुए कहा, “सुहावना निःसंदेह! सूर्य तो ओस की बूँदों को झुलसा रहा है और आप उस लड़के को पैदल चला रहे हैं. निःसंदेह वह गर्मी और प्यास से मूर्छित हो रहा है, आप को अपने आप पर शर्म आनी चाहिए.” औरत पैर पटकती हुई घर के अंदर चली गई.





किसान रुक गया और उसने एक मिनट विचार किया. उसने गधे पर रखे टमाटरों की बोरियां को व्यवस्थित किया. फिर उसने बेटे को उठा कर गधे पर बैठा दिया.





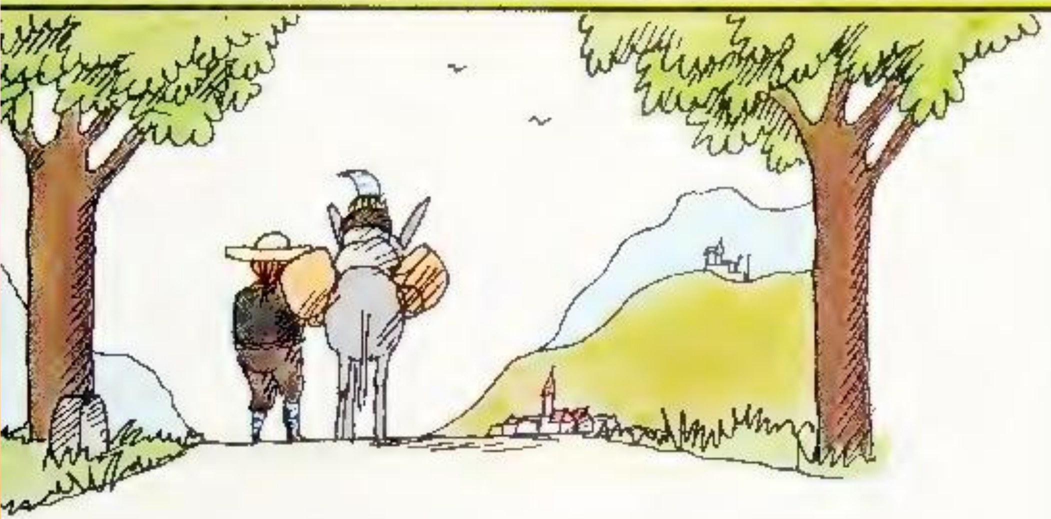


"लेकिन पिता जी," बेटे ने कहा, "उस औरत का लड़का अभी बच्चा है और एक बच्चा जल्दी थक जाता है. मुझे चलना पसंद है. मैं न थका हूँ और न मुझे गर्मी लग रही है."

"बेटे," पिता ने कहा, "याद रखो, समय रहते संभल जाने से बड़ी मुसीबत टल जाती है. अभी तुम अच्छा महसूस कर रहे हो लेकिन अगर तुम और चलोगे तो तुम ऐसा महसूस नहीं करोगे. सूर्य की गर्मी तुम्हें झुलसा देगी और तुम्हारे बालों से भाप निकलने लगेगी. तुम्हारा गला सूख जाएगा और टांगें कांपने लगेंगी. तुम मूर्छित होकर सड़क गिर जाओगे और फिर उठ न पाओगे. नहीं, तुम्हें गधे की सवारी करनी ही पड़ेगी. मैं अपने बेटे को खो नहीं सकता!"

"हाँ, पिताजी," बेटे ने कहा, वह इतना भयभीत हो गया था कि उसके आँसू निकलने वाले थे और वह बहुत शक्तिहीन महसूस कर रहा था.





वह कुछ दूर तक ऐसे ही चले. वह एक वृद्ध के निकट पहुँचे जो सड़क किनारे एक पेड़ की छाया में बैठा था. इसके पहले कि लड़के का पिता अपनी हैट को छू कर वृद्ध का अभिवादन करता, वृद्ध ने रूखे स्वर में कहा, “तुम कितने निकम्मे बेटे हो, तुम गधे पर सवार हो और तुम्हारा बूढ़ा पिता पैदल चल रहा है! और आप, महाशय, कैसे पिता हैं आप जो अपने बेटे को ऐसे संस्कार दिए हैं!” और कुछ बुदबुदाते हुए वृद्ध सड़क पर पाँव पटकता हुआ वहाँ से चला गया.



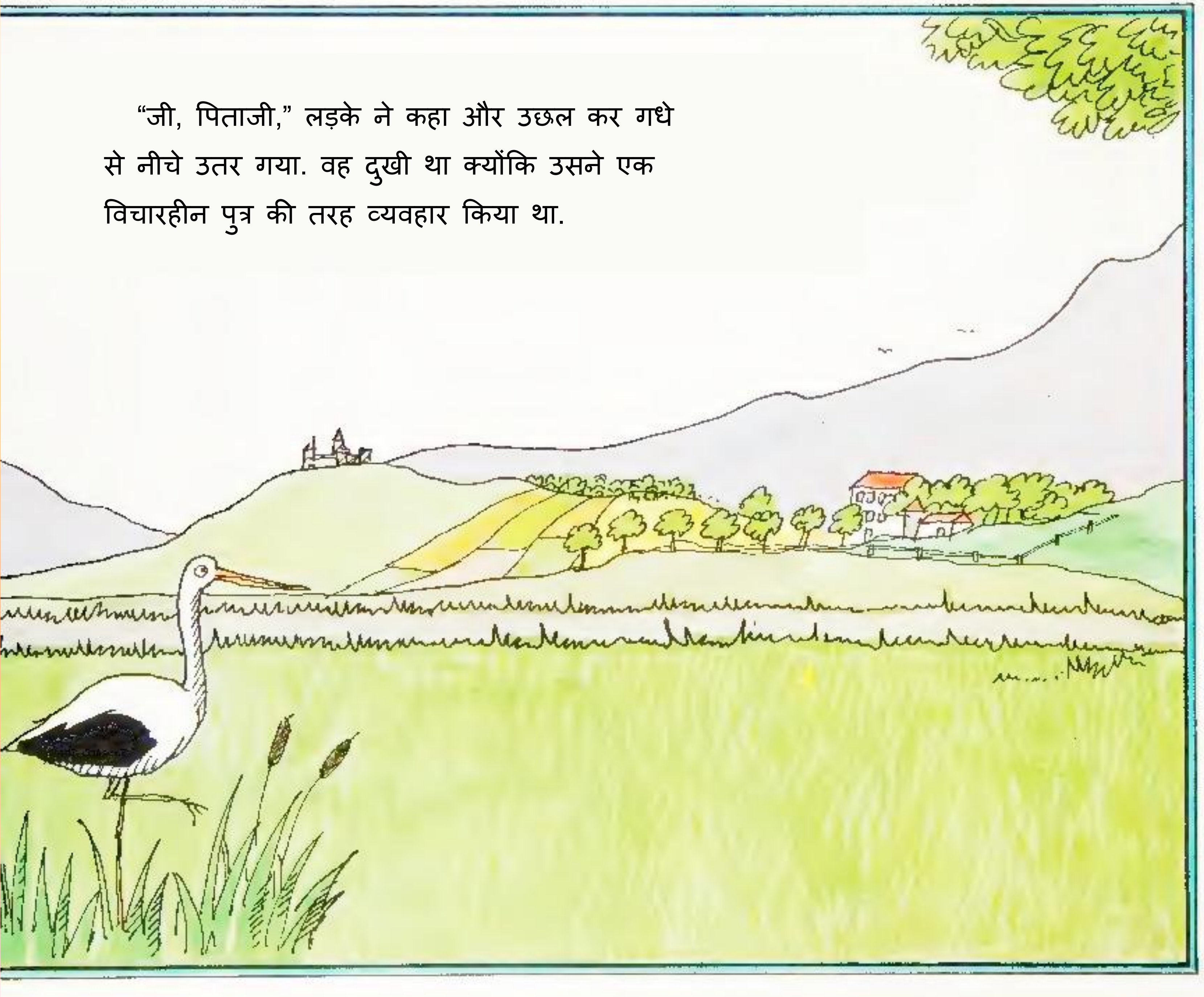


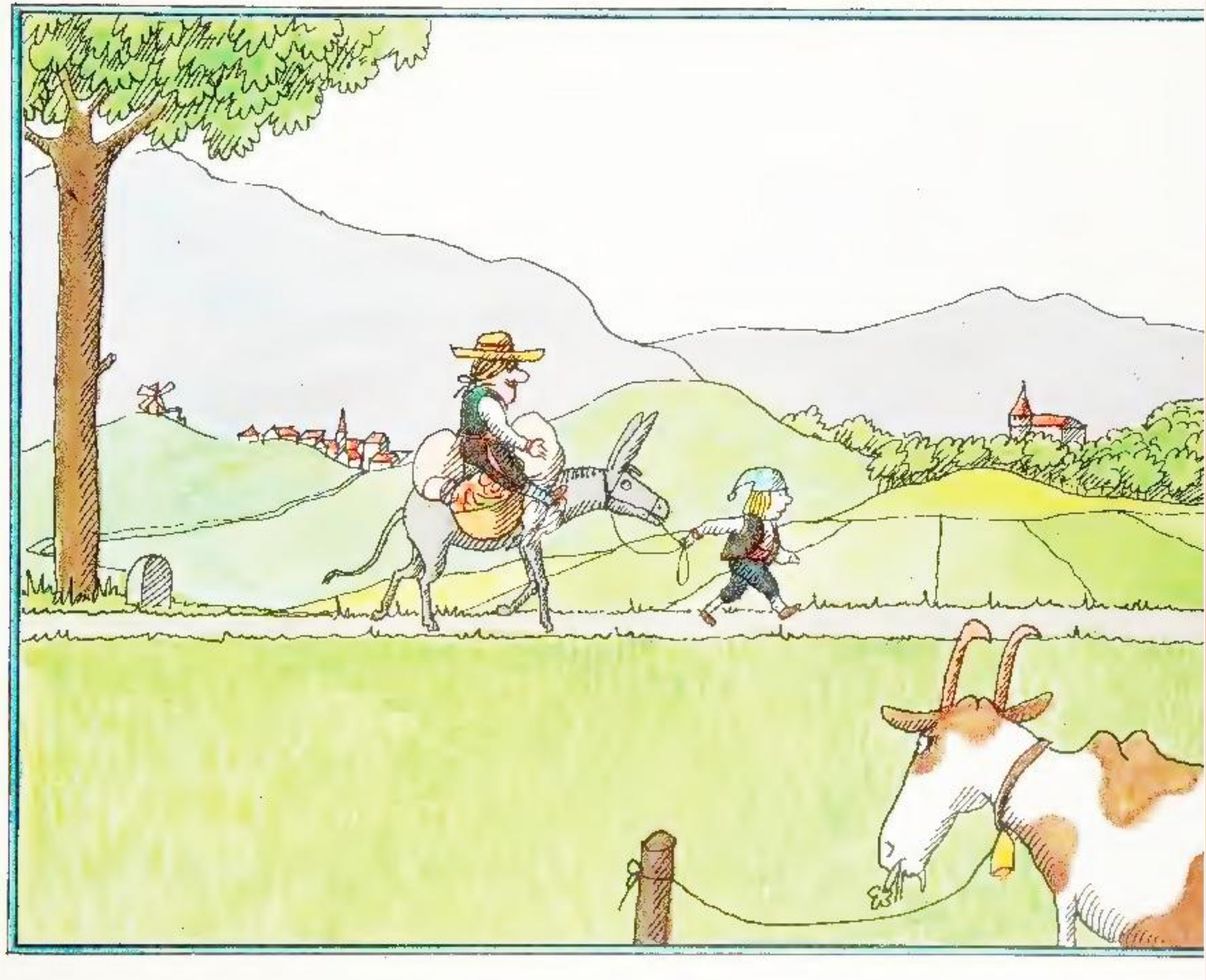
किसान रुक गया और उसने कुछ पल विचार किया और फिर विनम्रता से बेटे को गधे से उतर जाने के लिए कहा. “लेकिन पिताजी,” लड़के ने कहा, “आप असहाय और बूढ़े व्यक्ति बिलकुल नहीं हैं.”

“बेटा,” पिता ने कहा. “याद रखो, हमें हमेशा अनुभवी लोगों की बात सुननी चाहिए. मैं अभी बूढ़ा नहीं हुआ लेकिन एक दिन मैं बहुत बूढ़ा हो जाऊँगा. तब मैं थक कर चूर हो जाऊँगा और झुक कर चलूँगा. सड़क पर मैं कठिनाई से, बैसाखियों के सहारे, लड़खड़ाते हुए चलूँगा. मेरी लंबी, सफेद दाढ़ी ज़मीन पर धूल और कंटीली झाड़ियों को घसीटते हुई ले जाएगी. और यह सब इसलिए होगा कि मैंने तुम्हें मेरे साथ सही व्यवहार करना नहीं सिखाया. मेरे बेटे, नीचे उतर जाओ और अपने लाचार, बूढ़े बाप को गधे पर सवार होने दो.



“जी, पिताजी,” लड़के ने कहा और उछल कर गधे से नीचे उतर गया. वह दुखी था क्योंकि उसने एक विचारहीन पुत्र की तरह व्यवहार किया था.



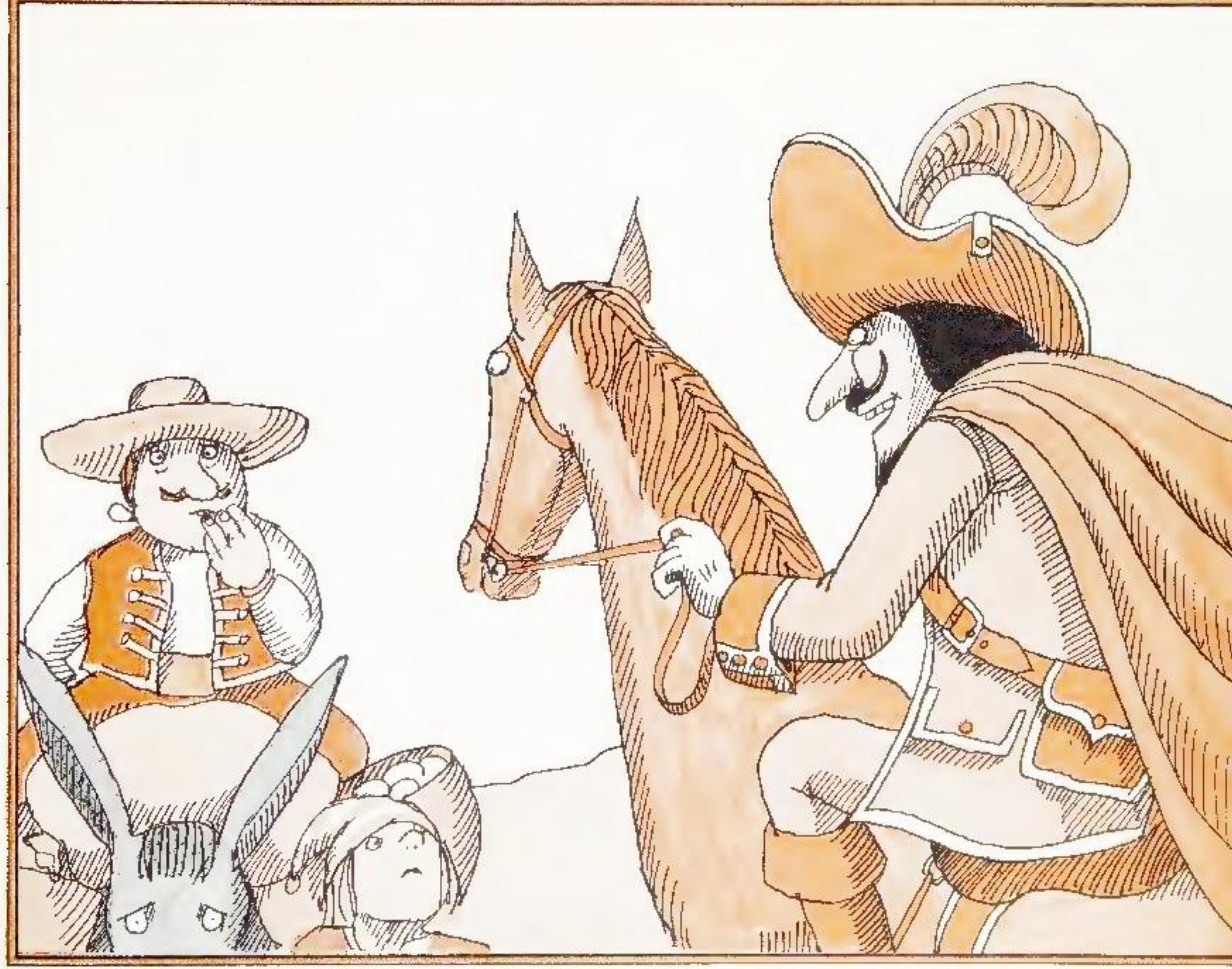




कुछ समय बाद उनकी भेंट एक आदमी से हुई जो एक घोड़े पर सवार उनकी ओर आ रहा था.

"कैसी मूर्खता है कि दोनों में सिर्फ एक ही गधे पर सवार है!" उस आदमी ने कहा. "आप अपने बेटे के सामने किस प्रकार का उदाहरण स्थापित कर रहे हैं? क्या आप चाहते हैं कि बड़ा होकर वह मूर्ख निकले? क्या आप चाहते हैं कि वह अपनी बुद्धि का कभी उपयोग न करे? अरे, मुझे तो लगता है कि इस गधे में आप दोनों से अधिक दिमाग है! मुझे लगता है......" बाकी के जो शब्द उसने कहे वह उसके घोड़े ने ही सुने क्योंकि वह दूर जा चुका था.

"उस आदमी की बातों में दम है," किसान ने कहा. "क्योंकि हम दोनों ही इस गधे पर सवार हो सकते हैं.

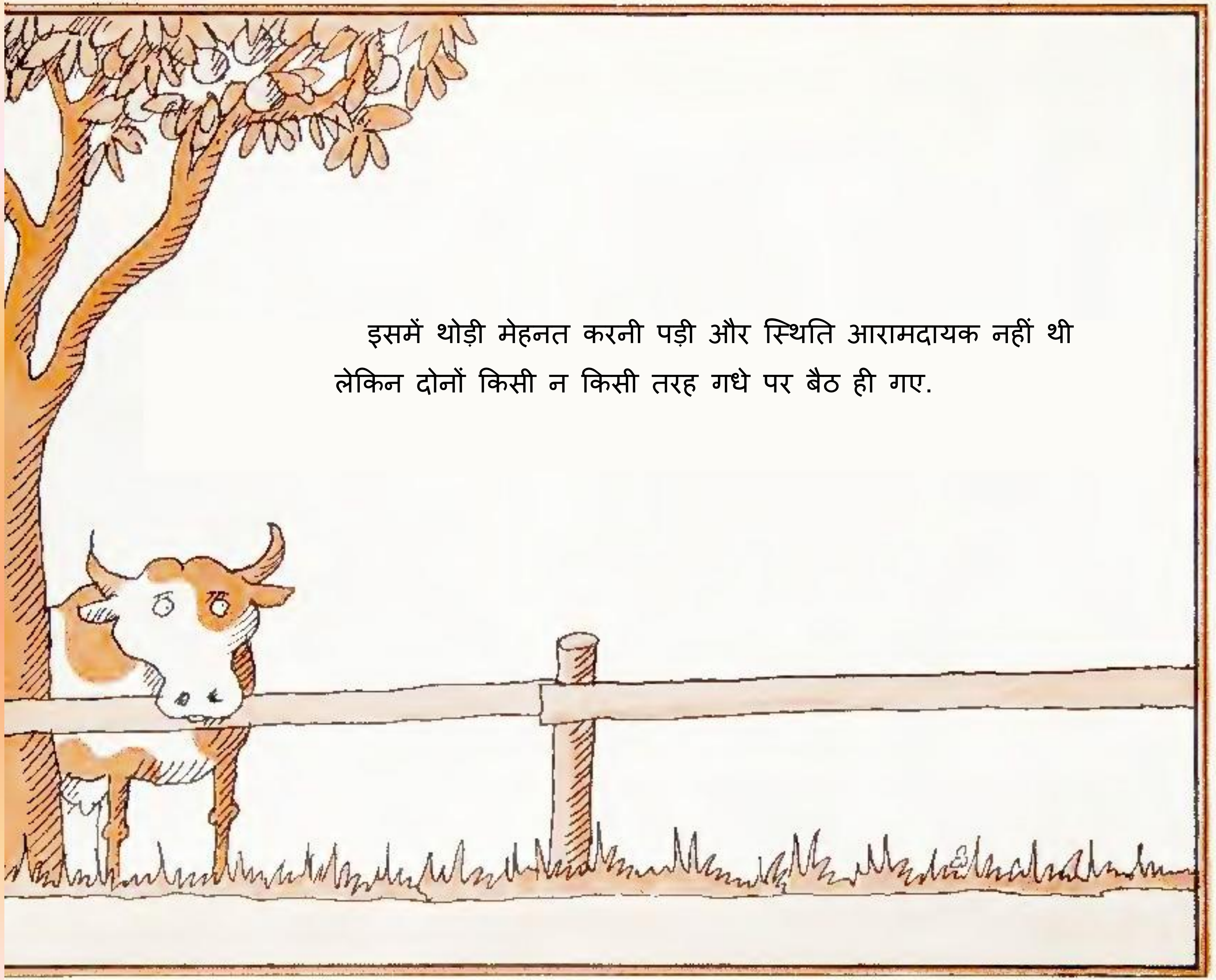


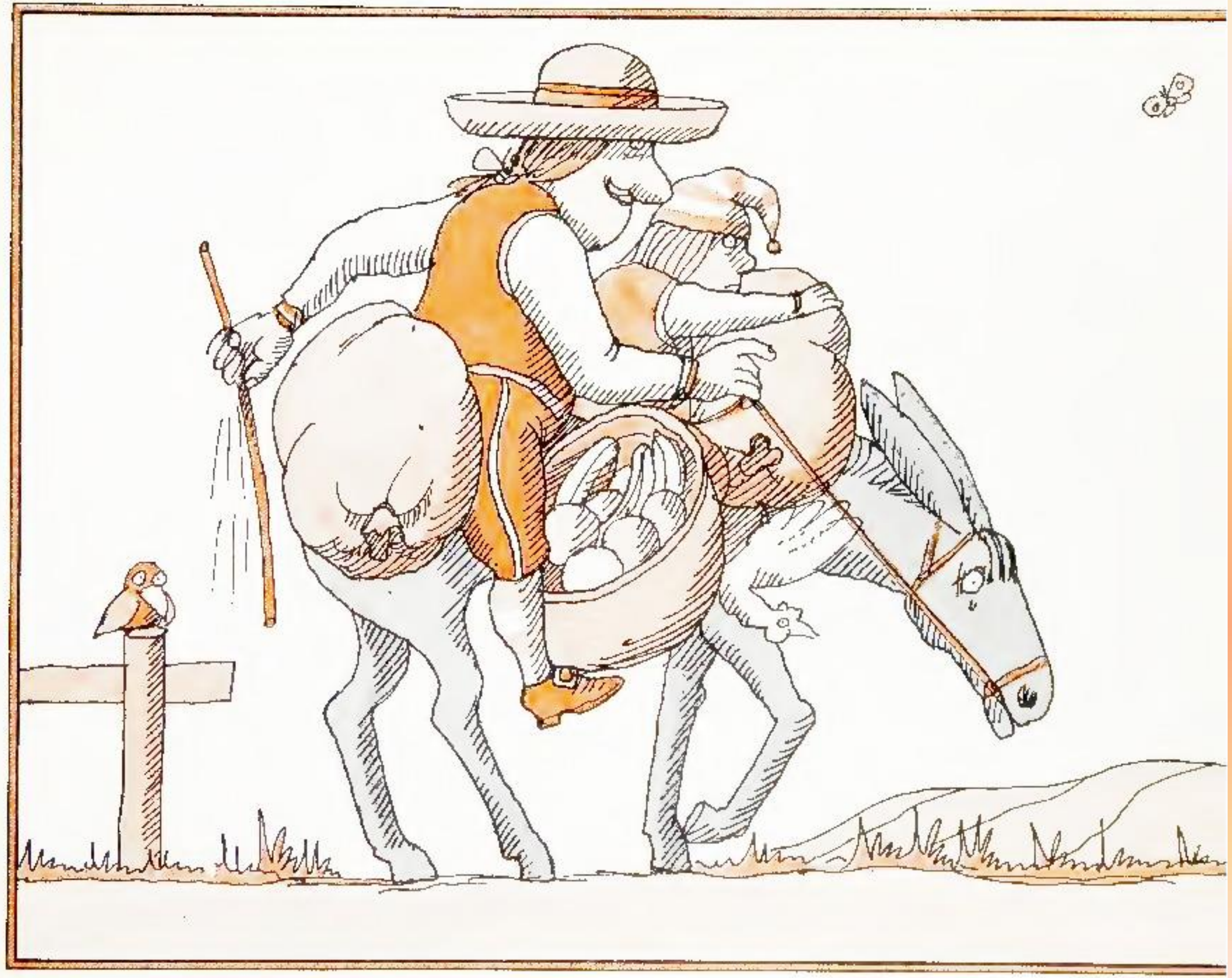


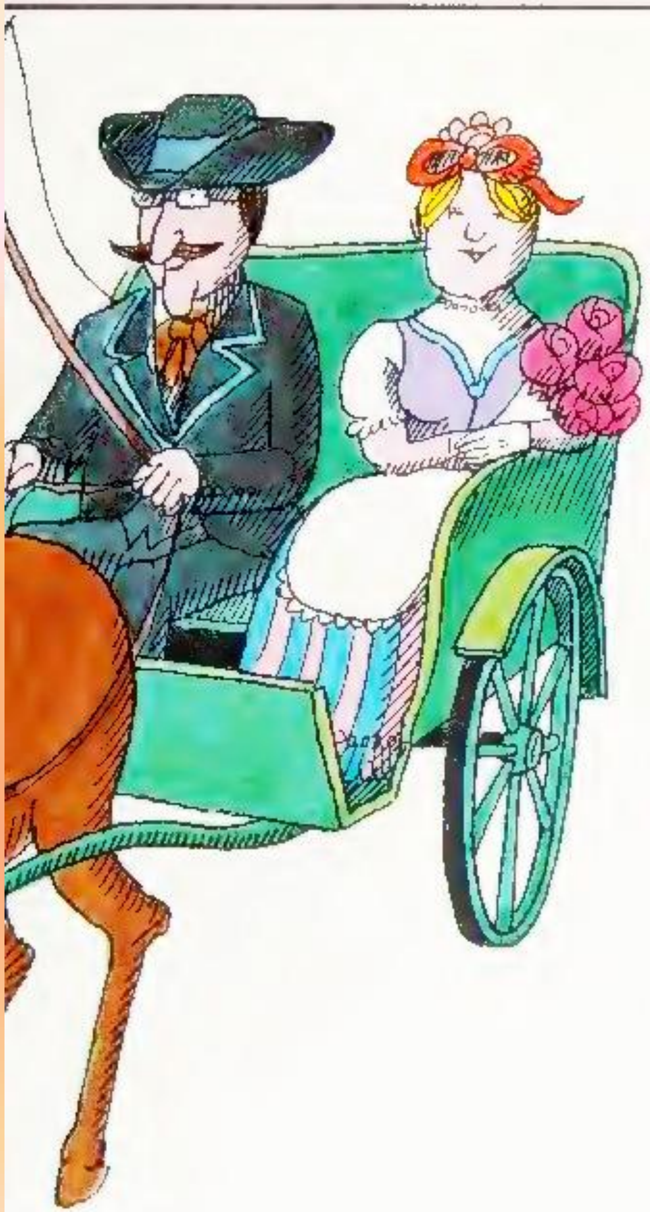
“ओह पिता जी,” बेटे ने कहा, “नीचे उतर कर इन बोरियों को दुबारा व्यवस्थित करें ताकि मैं भी इस पर बैठ पाऊँ.”



इसमें थोड़ी मेहनत करनी पड़ी और स्थिति आरामदायक नहीं थी लेकिन दोनों किसी न किसी तरह गधे पर बैठ ही गए.







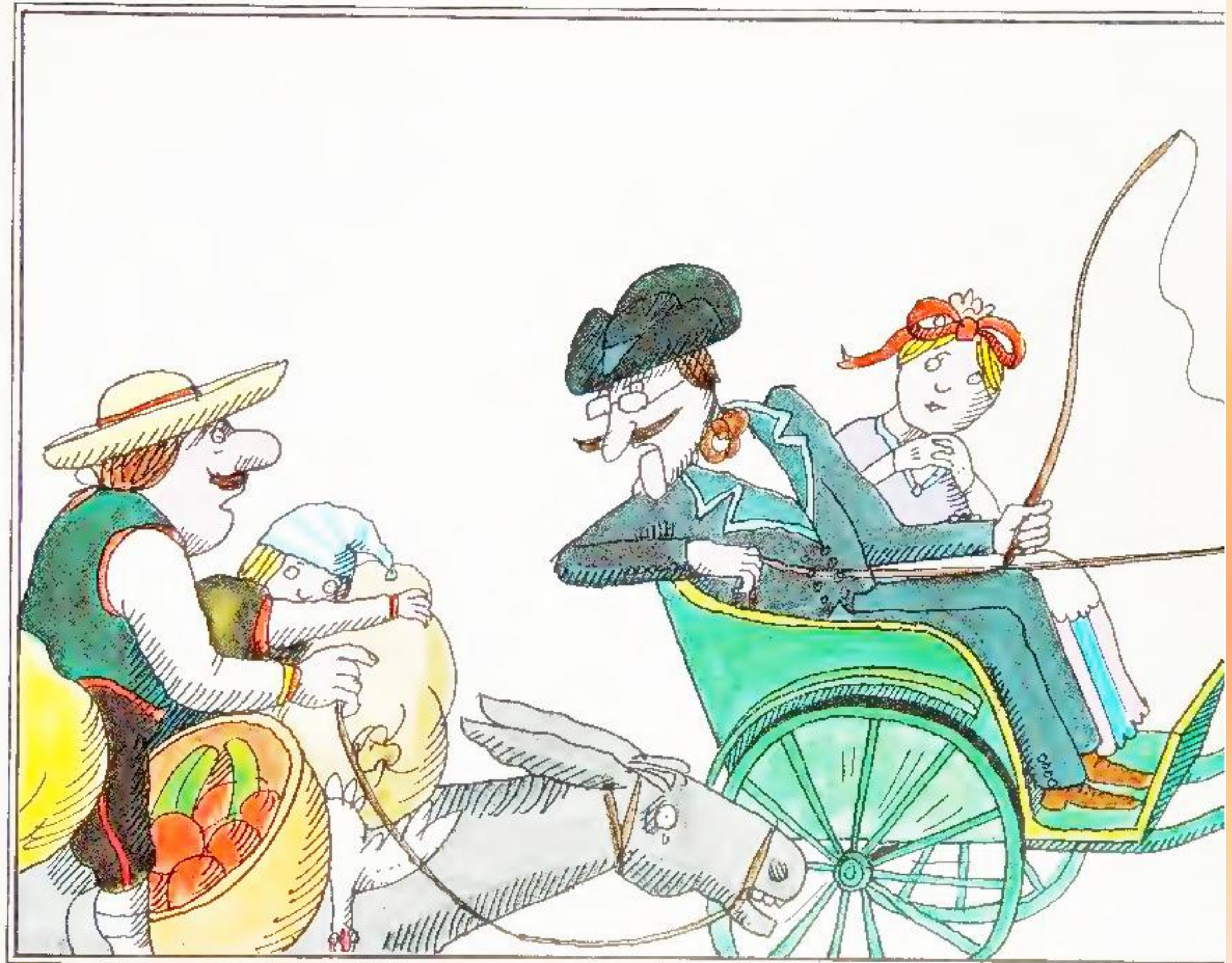
वह अधिक दूर न गए थे कि एक गाड़ी उनके पास से गुज़री, जिसमें एक आदमी और उसकी पत्नी बैठे हुए थे.

“ओह देखो, बेचारे गधे से इतना भार उठवाना कितनी क्रूरता!” पत्नी ने कहा.

“बेशक क्रूरता है,” उसके पति ने कहा.

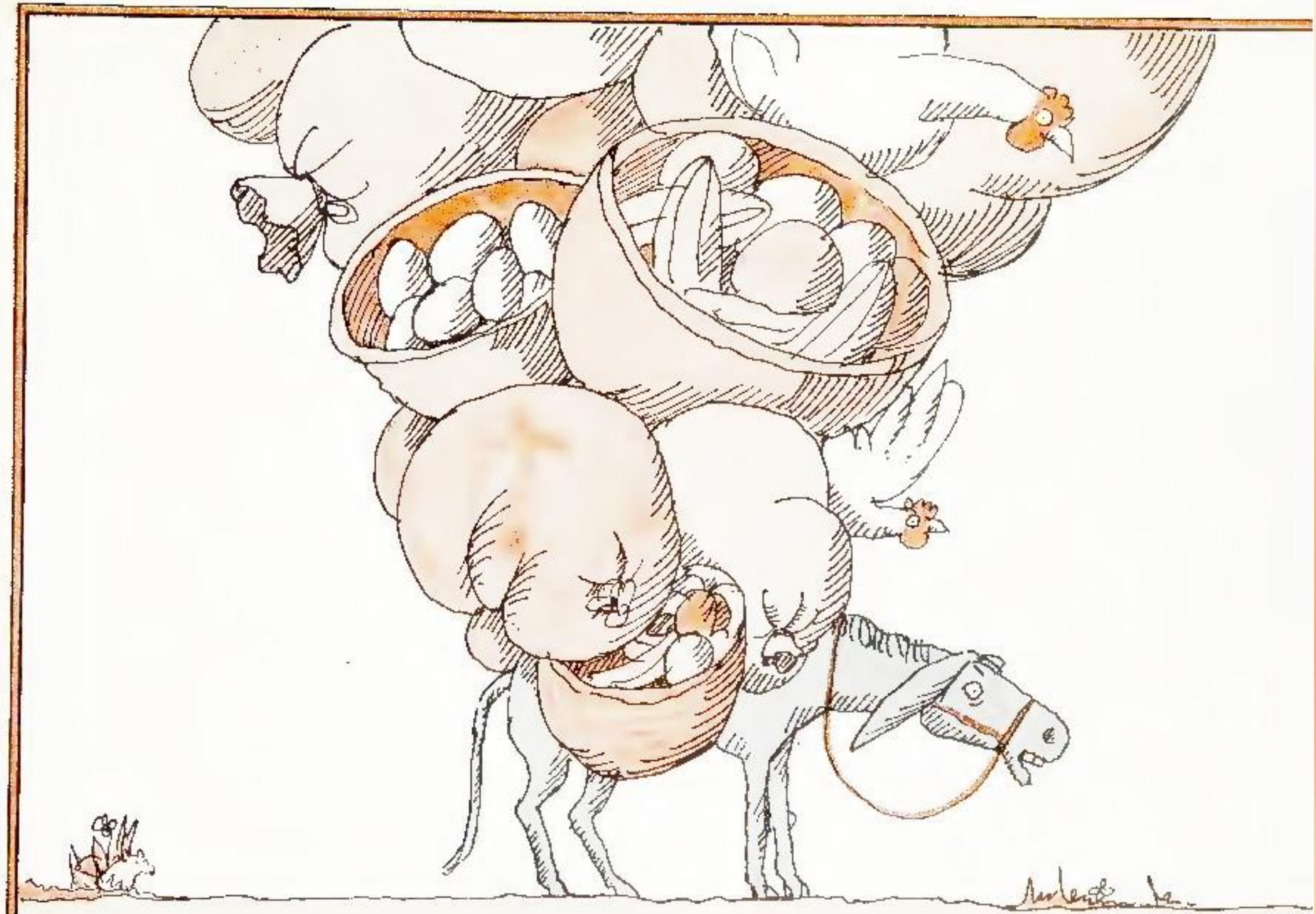
“महाशय,” उसने ऊँची आवाज़ में कहा, “आपको शर्म आनी चाहिए. आप और आपका बेटा इतने ताकतवर हैं कि आप इस गधे को उठा सकते हैं, लेकिन आप दोनों उस पर दो भीमकाय दैत्यों की तरह सवार हैं!”

किसान ने उन्हें जाते हुए देखा और निराशा में अपना सिर हिलाया.



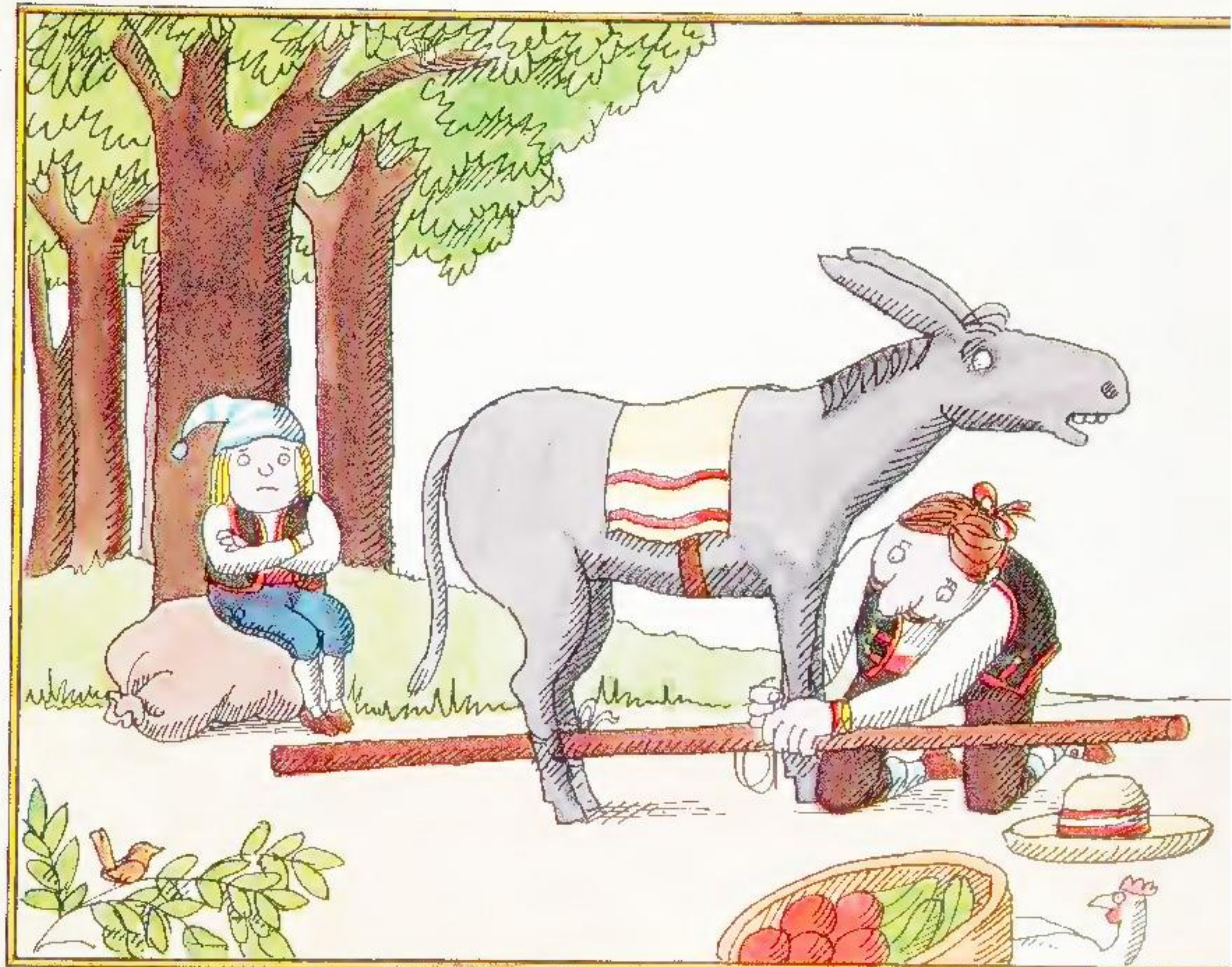


"उनकी बात में दम है," उसने अपने बेटे से कहा. "याद रखो मेरे बेटे, हमें निरीह पशुओं के साथ दयालु होना चाहिए. हमारा गधा यह बोझ उठा सकता है लेकिन जब वह थक जाएगा तो हमें बता न पायेगा. आगे चलने के लिए उसे संघर्ष करना पड़ेगा. उसे उस पर लादा बोझ भारी, और भारी लगने लगेगा. चार मुर्गियाँ उसे आठ मुर्गियों समान लगने लगेंगी और उस पर रखे अंडे बड़े-बड़े पत्थरों जैसे लगने लगेंगे. उसे लगेगा कि उस पर बोरियों का पहाड़ रखा हुआ है और दो दैत्य उस पर बैठे हैं लेकिन वह हमें कुछ कह न पाएगा. एक समय आएगा जब वह लड़खड़ाने लगेगा या मूर्छित हो जाएगा या उसकी पीठ दब कर घूम जाएगी!"





पिता और पुत्र झटपट गधे से उतर कर नीचे आ गए. उन्होंने गधे पर रखी मुर्गियाँ और अंडे और सारी बोरियाँ उतार लीं. उन्हें यह देख कर प्रसन्नता हुई कि गधे की पीठ दब कर घूम नहीं गई थी.



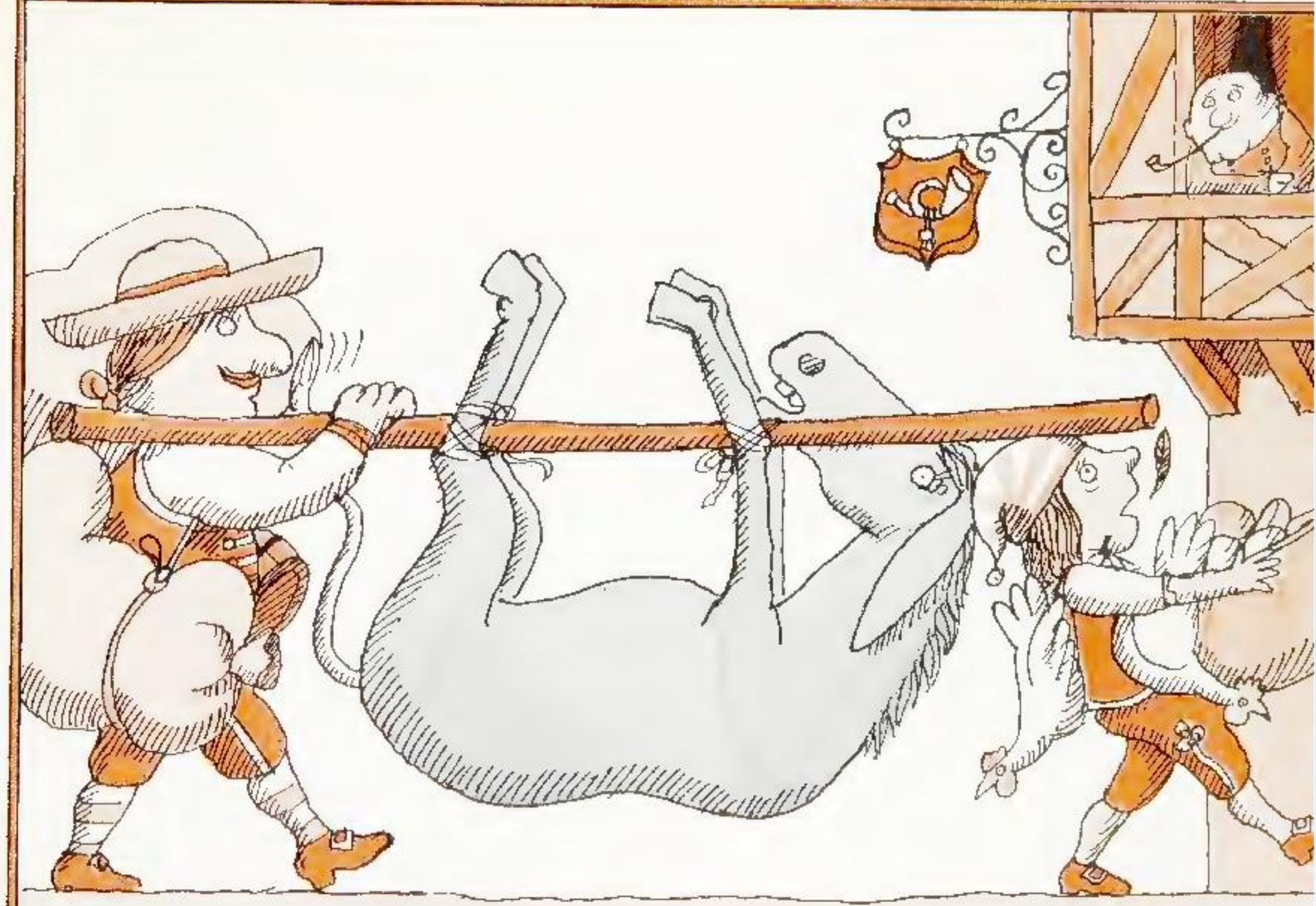


किसान ने एक पेड़ की डाल काट कर एक मोटा डंडा बनाया और गधे के पाँव उस डंडे के साथ बांध दिए.

फिर उसने सारी बोरियाँ अपनी कमर और गर्दन के साथ बांध कर लटका लीं. मुर्गियाँ अपने बेटे के कंधे पर लटका दीं. उन्होंने मोटे डंडे को उठाया और उससे बंधे गधे को उठा कर बाज़ार की ओर चल पड़े.

“भगवान की कृपा है कि हम समय रहते गधे से उतर गए,” मुँह के पास हिलती गधे की पूँछ से बचते हुए किसान ने कहा. “हमारा गधा अभी भी स्वस्थ और सही है.”

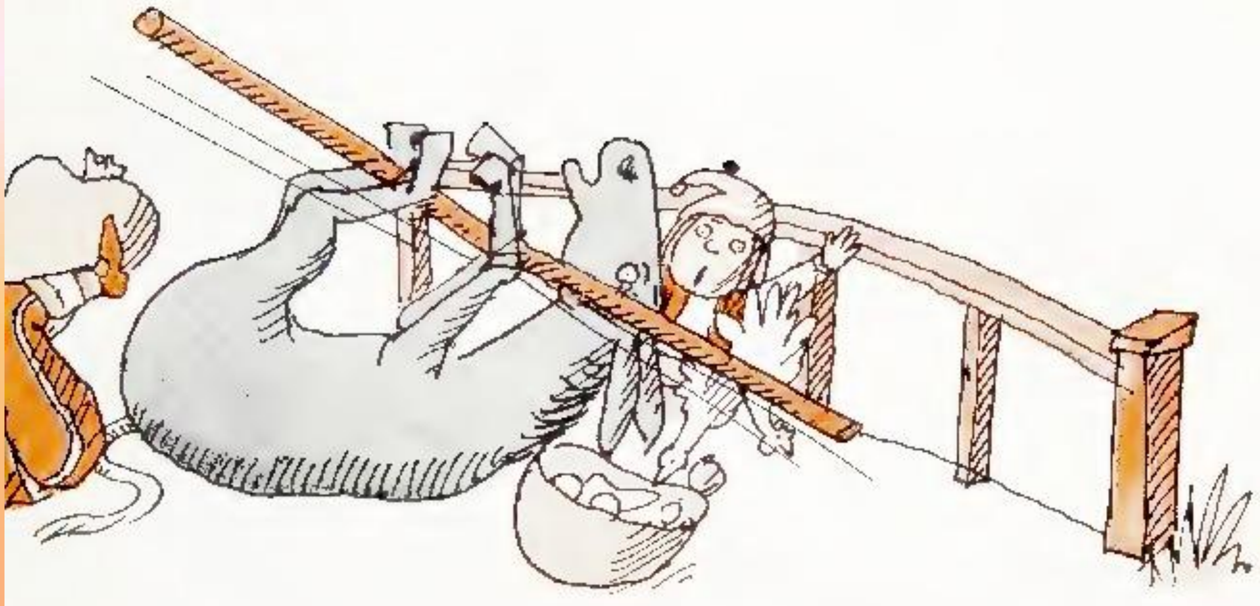
“हाँ पिताजी,” बेटे ने कहा, और अपनी नाक से मुर्गी का एक पंख उसने फूँक मार कर उड़ाया.



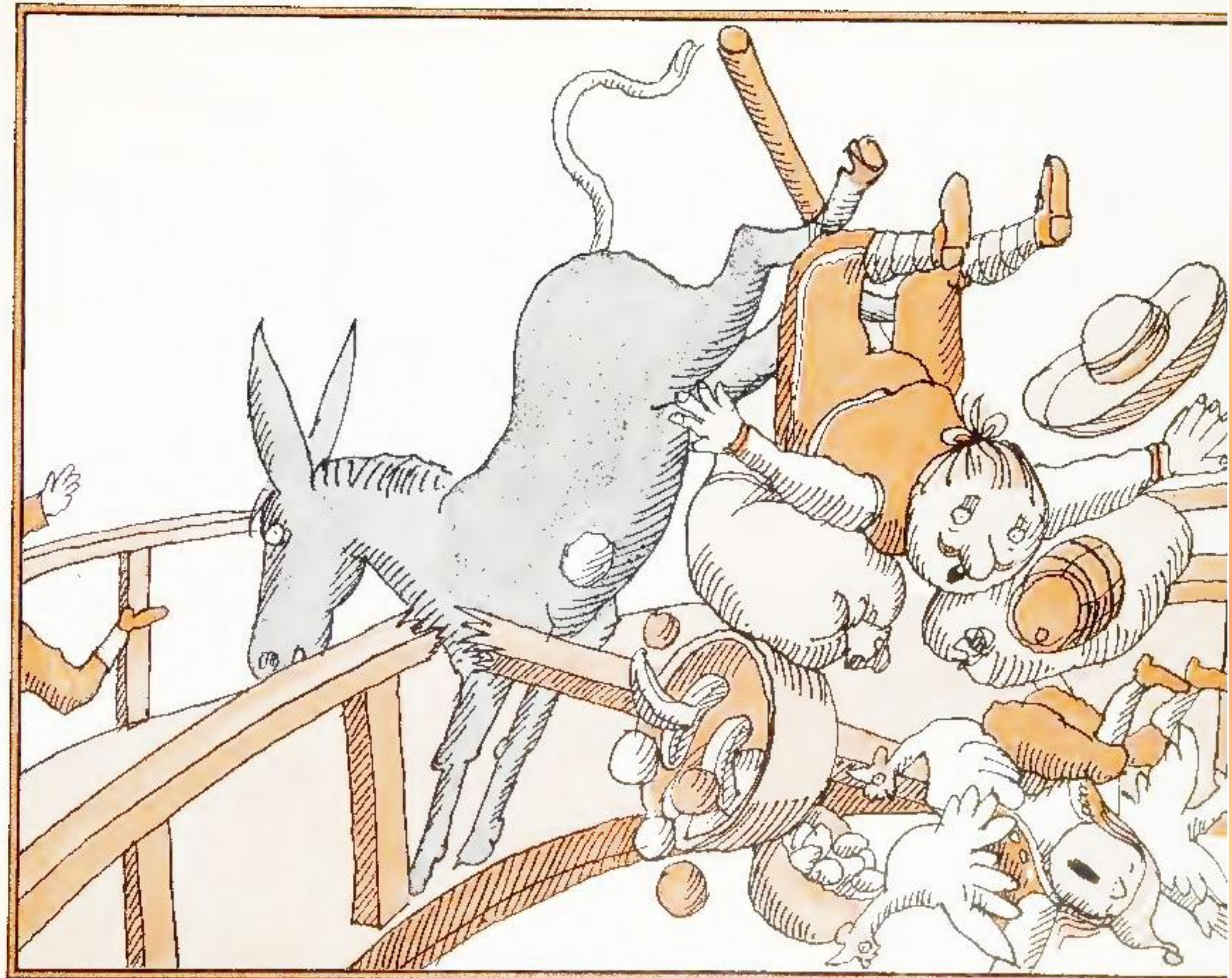


धीरे-धीरे वह एक पुल के पास पहुँचे और पुल पार करने लगे. कुछ युवक पुल की दूसरी तरफ से इस ओर आ रहे थे. हर एक ने मोटे डंडे से लटकते हुए गधे को, लड़के के कंधों से लटकती मुर्गियों को, किसान की कमर और गर्दन से लटकती बोरियों को ध्यान से देखा और फिर सब ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगे और चिल्लाने लगे.





इस अचानक शोर को सुनकर गधा, जो उलटा लटकने के कारण बहुत असहज था, हड़बड़ा गया और ज़ोर-ज़ोर से अपनी टांगें हिलाने लगा और अपने बंधन से छूटने का प्रयास करने लगा. जिस रस्सी से उसकी टांगें बंधीं थीं टूट गई. डंडा उड़ कर दूर जा गिरा. किसान और उसका बेटा और गधा और मुर्गियाँ, अंडे, मटर, टमाटर, खीरे सब नदी में जा गिरे.





आखिरकार, पिता और पुत्र किसी तरह नदी के दूसरे किनारे आ गए. मुर्गियाँ चिल्ला रही थीं. सामान से भरी बोरियाँ नदी में कहीं खो गई थीं. गधा भी आँखों से ओझल हो गया था.

सोच-समझकर किसान ने अपना सिर हिलाया. अंततः उसने कहा, "अब भी सब ठीक है, मेरे बेटे. गधे की पीठ दब कर घूमी नहीं, तुम ताकतवर हो और तुम्हारा सिर सामान्य है और बुढ़ापे में मेरी उपेक्षा नहीं होगी. सब सही है. बेटा, अंत भले का भला."

"लेकिन पिता जी," बेटे ने कहा, "हम घर कैसे जाएंगे? मुझे नहीं लगता कि अंत सही हुआ है."

पिता ने उसे घूर कर देखा. "मेरे बेटे," उसने कहा, "हमेशा दो बातें स्मरण रखना, तुम हर एक को प्रसन्न नहीं रख सकते और कुछ लोग कभी संतुष्ट नहीं होते!"





